अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

समय : 3 घंटा | तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2013) | दिनांक 21.12.2013

तृतीय वर्ष : द्वितीय प्रश्न पत्र | पूर्णांक – 100

नव पदार्थ – पुण्य, पाप – 50

प्र.1 किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर एक या दो लाईन में लिखें – 20

(पुण्य – किन्हीं छः प्रश्नों का उत्तर दें)

(क) नाम कर्म की किस प्रकृति के उदय से जीव के वचन सबको मान्य होते हैं?

(ख) पुण्य संचित कैसे होते हैं? (ग) काम और भोग का क्या अर्थ है?

(घ) द्रव्य पुण्य और भाव पुण्य की परिभाषा लिखें।

(ङ) किन कारणों से जीव किल्विषी देव योग्य कर्म का बन्ध करता है?

(च) नौ प्रकार के परिग्रह कौन–कौन से हैं? नाम बताएँ।

(छ) धर्मकथा से जीव क्या प्राप्त करता है? (ज) अरिहंत वत्सलता से क्या तात्पर्य है?

(पाप – किन्हीं चार प्रश्नों का उत्तर दें)

(झ) बालवीर्य वाला कौन कहलाता है? (ञ) जुगुप्सा मोहनीय के उदय से क्या होता है?

(ट) दर्शन मोहनीय कर्म किसे कहते हैं? (ठ) अनन्तानुबन्धी कषाय किसके समान है?

प्र.2 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दें – 10

(क) योग किसे कहते हैं? सिद्ध करें कि पुण्य निरवद्य योग से होता है?

(ख) अल्पायुष्य और दीर्घायुष्य बंध के हेतु लिखें।

(ग) जीव भारी और हल्का कैसे होता है?

(घ) आचार्य भिक्षु ने आठों कर्मों के नाम को गुण निष्पन्न क्यों कहा है?

प्र.3 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिए – 20

(क) स्वामीजी ने पुण्य की वांछा करने को पाप का बंध क्यों कहा है?

(ख) पुण्य के नौ बोल अपेक्षा सहित हैं या अपेक्षा रहित हैं?

(ग) दर्शनावरणीय कर्म पर विस्तार से प्रकाश डालें।

(घ) सिद्ध करें कि आशय से ही योग शुभ नहीं होता?

अवबोध : निर्जरा से देवगति – 30

प्र.4 किन्हीं नौ प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्य में दें – 9

(क) संयमी मुनि कौन से देवों में उत्पन्न होते हैं?

(ख) भवनपति देवता को कुमार क्यों कहा गया है? (ग) मोक्ष कहाँ है?

(घ) एक साथ कितने तीर्थंकर सिद्ध हो सकते हैं?

(ङ) बंध से क्या नये कर्मों का बंध भी होता है?

(च) मोक्ष में आत्मा कितनी व कौन सी होती है? (छ) व्यंतर देवों के कितने इंद्र हैं?

(ज) बंध और पुण्य पाप में क्या अन्तर है?

(झ) पुण्य का बंध कौन सा भाव, कौन सी आत्मा?

(ञ) कषाय और नोकषाय जन्य प्रवृत्ति किस के बंध का हेतु है?

(ट) सकाम और अकाम से क्या तात्पर्य है?

(ठ) निर्जरा और पुण्य की क्रिया एक है या दो?

प्र.5 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर संक्षिप्त में दीजिए – 12

(क) क्या निर्जरा से मात्र अशुभ कर्म ही टूटते हैं?

(ख) कर्म बन्ध के समय प्रदेश आदि चारों का होता है या तीन, दो, एक का हो सकता है?

(ग) क्या सिद्धों की पर्याय भी बदलती है? (घ) बन्ध की क्या परिभाषा है?

(ङ) कई लज्जावश धर्म करते हैं क्या उसमें भी निर्जरा होती है?

(च) जब लिंग बाधक नहीं है तब नपुंसक लिंगी में सम्यक्त्व का निषेध क्यों किया गया है?

(छ) सिद्धशिला पर जब सिद्ध नहीं रहते तब इसे सिद्धशिला क्यों कहते हैं?

(ज) क्या सभी केवलियों के केवली समुद्घात होता है? केवली समुद्घात किया जाता है या स्वतः होता है?

प्र.6 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर व्याख्या सहित दें – 9

(क) वट, पीपल आदि वृक्षों में देवताओं का निवास होता है ऐसा कहा जाता है। क्या इसमें सच्चाई है?

(ख) केवली समुद्घात का क्या क्रम है?

(ग) देवलोक से देव च्युत (मर) होकर कहाँ–कहाँ जाते हैं?

(घ) वैमानिक देवों का अवधिज्ञान कितना है? (ड.) क्या सिद्धों का कोई भेद है?

गीतिका (दस दान, अठारह पाप) – 20

प्र.7 कोई तीन पद्य अर्थ सहित लिखें – 15

(क) ''देवे मूलादिक.....मोह कर्म ए''।

(ख) ''ग्रह करड़ा.....जतन भणी ए''।

(ग) ''लेणात ने जिम.....तिणरो नाम ए।।

(घ) ''हिवे सुणजो.....ताण जो''।

(ङ) ''दाता ने अन.....पार उतारसी''।

प्र.8 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दें – 5

(क) दस दान 'में' कितने दान भगवान की आज्ञा में और कितने आज्ञा के बाहर हैं?

(ख) व्रत–अव्रत का पृथककरण किन आगम सूत्रों के रहस्य निकाल कर किया गया है?

(ग) संसार में भ्रमण कराने वाला कौन सा दान है?

(घ) भगवान ने कितने पाप बताएँ हैं?

(ङ) भगवान ने अभयदान किसे कहा है?

(च) दान देते समय कौन सी तीन चीजें शुद्ध हो, तब लाभ मिलता है?